[श्री न० प० यादव]

नदी के पुल पर करीब हजार आदमी इकट्ठे जा रहे थे, तो फिर गाड़ी क्यों नहीं रोकी गई ?

डा० राम सुभग सिंह : इस बात की भी जांच होगी कि गाड़ी क्यों नहीं रोकी गई ?

श्री तुलसीदास जाधव (नांदेड़): ऐसे रेलवे पुलों पर बार-बार एक्सिडेंट्स होते हैं, जैसे जिला शोलापुर में सीना नदी के ब्रिज पर बहुत एक्सिडेंट्स होते हैं । नदी पर जो ब्रिज होते हैं, उस के साथ साथ दोनों तरफ फुटपाथ सरकार क्यों नहीं बनाती है, जिस से ये एक्सिडेंट्स न हों ? इस ब्रिज पर फुट पाथ था या नहीं, कोई दूसरा रास्ता था या नहीं ?

डा० राम सुभग सिंह : जैसा कि श्रीमान् जानते हैं, रेल के अनेक पुल ऐसे बने हुए हैं, हैं, जहां केवल रेलें ही चलती हैं । यह भी ऐसा ही पुल है ।

श्री विश्वनाथ पाण्डेय (सलेमपुर) : क्या सरकार इस दुर्घटना की जांच के लिए कोई उच्च कोटि की जांच समिति बिठाने का विचार कर रही है ?

डा० राम सुभग सिंह : जैसा कि मैं ने पहले बताया है कि एक सीनियर स्केल आफ़िसर्ज की कमेटी बहाल की गई है ।

श्री ब्रज बिहारी मेहरोत्रा (बिल्हौर) : क्या मंत्री जी यह बताने की कृपा करेंगे कि जब कार्तिक के मेले में हर साल लोग पुल पर से निकलते हैं, तो फिर इस साल वहां पर ट्रैफ़िक कंट्रोल का इन्तजाम क्यों नहीं किया गया है ?

डा० राम सुभग सिंह : मैं नहीं जानता कि हर साल की बात कहां तक सही है, लेकिन वहां दोनों ओर वार्निंग का निशान लगाया गया है कि नहीं चलना चाहिए, मगर यह दुर्घटना हुई है । इन सब बातों को देखा जायेगा ।

12.7 hrs.

RE: CALLING-ATTENTION-NOTICE (*Query*)

Mr. Speaker: We shall now take up yesterday's calling-attention notice. Now, Shri Hari Vishnu Kamath.

श्री हुकम चन्द कछवाय (देवास) : अध्यक्ष महोदय, मैं ने एक काम-रोको प्रस्ताव दिया था, जिस का सम्बन्ध एक बड़े महत्वपूर्ण विषय से है ।

अध्यक्ष महोदय : मैं उस को इस तरह से नहीं ले सकता हूं ।

श्री मधु लिमये (मुंगेर) : अध्यक्ष महोदय, मैं ने कल अपने ध्यानाकर्षण प्रस्ताव के बारे में जब कहा था, तो आप ने कहा था, कि आप मुझ को मौका देंगे । उस का संबंध बम्बई की इन्दु ग्रुप की मिलों से है । 22 हजार मजदूरों का सवाल है ।

अध्यक्ष महोदय : मैं उस को इस तरह नहीं उठाने दूंगा ?

श्री मधु लिमये : तो किस तरह उठाने देंगे ? यह लाखों लोगों की जिन्दगी और मौत का सवाल है । आखिर यह लोक सभा काहे के लिए है ?

अध्यक्ष महोदय : वह मैं समझता हूं ।

श्री मधु लिमये : आप बतायें कि आप कब बुलायेंगे—आज बुलायेंगे, बाद में बुलायेंगे, कल बुलायेंगे ?

अध्यक्ष महोदय : मैं अब नहीं कह सकता ।

श्री मधु लिमये : यह मामला 22 हजार मजदूरों का है । ये मिलें बन्द होने जा रही हैं । सरकार ने उन को हाथ में लिया था । सरकार ने उन को अच्छी स्थिति में लाने के बाद फिर मिल-मालिकों के हाथ में दे दिया । एक करोड़ रुपये का उस वक्त नफ़ा हो गया था । मिल-मालिकों ने फिर उस को बर्बाद कर दिया । अगर आप इस मामले को उठाने

[श्री मधु लिमये]

नहीं देंगे, तो फिर हम लोक सभा में क्यों आए हैं ? आप मुझे दो मिनट दीजिए ।

अध्यक्ष महोदय : मैं इस वक्त दो मिनट नहीं दे सकता हूं । जहां तक आप के नोटिस का सवाल है, मैं ने उस को नामन्जूर कर दिया है ।

श्री मधु लिमये : आप सभी नोटिसों को नामन्जूर कर देते हैं ।

अध्यक्ष महोदय : मैं इसी लिए बैठा हुआ हूं ।

श्री मधु लिमये : इस पर मेरा व्यवस्था का प्रश्न है ।

अध्यक्ष महोदय : इस वक्त मैं आप को व्यवस्था का प्रश्न नहीं उठाने दूंगा ।

श्री मधु लिमये : क्यों नहीं उठाने देंगे ? इस ध्यानाकर्षण प्रस्ताव के बारे में मेरा व्यवस्था का प्रश्न है । व्यवस्था का प्रश्न तो आप को उठाने देना होगा ।

अध्यक्ष महोदय : यह कहना बड़ी अजीब बात है कि क्यों नही उठाने देंगे । It is a challenge to my authority that I cannot exercise that authority.

Shri Nath Pai (Rajapur): You could have perhaps helped matters by drawing his attention to the reply given to this question by the Minister concerned when I raised it the other day. He is raising a vital issue.

Mr. Speaker: Can I give reasons for every disallowance, and would they be discussed here? My reasons may be wrong. How can I have a discussion and begin to give reasons why I have disallowed it? Am I required to say when it would be taken up, why it has not been taken up? इसी वक्त उठाऊंगा, अब यह कहा जाता है तो क्या इस तरह से स्पीकर काम कर सकता है ? आप ही इस बात का फैसला करें ।

Shri Nath Pai: I fully agree with you, but the matter would have been helped by going to the substance of the question raised, and the substance was very simple. I do not say you are called upon to give reasons, I fully agree with you, nor would I agree that your authority should be challenged, but I am sure that Shri Madhu Limaye would have been satisfied if you had drawn attention to the reply given in the House, namely that the Government considers that there has been mismanagement of the mills and that Government is thinking of taking them over. If a copy of that reply had been sent, he would have been satisfied.

Mr. Speaker: Was it my duty to send him the reply that has been given? Every hon. Member in the House is supposed to know what has happened before. He should know as much as I do.

Shri Nath Pai: The issue he raises is a vital one.

Mr. Speaker: He can raise it in any other manner. If it has not been answered, he might give notice by any other motion, and certainly if it is vital, I am prepared to take it up, but how can I take it on the Calling Attention Motion? That is the question.

श्री मधु लिमये: अध्यक्ष महोदय . . .

अध्यक्ष महोदय : अब मुझे आगे चलने दीजिये ।

श्री मधु लिमये : यह बताया गया है. .

अध्यक्ष महोदय : इस पर बहस नहीं कर सकते हैं ।

श्री मधु लिमये : बहस की बात नहीं है । माननीय नाथ पाई जी ने कहा है कि अगर मेरा ध्यान उस प्रश्न के जवाब की ओर दिला दिया जाता तो शायद मैं नहीं उठाता । मैंने इस प्रश्न का जवाब ठीक से पढ़ा है और उस-के बाद ही मैंने ध्यानाकर्षण का सुझाव दिया

है । तफ्सीलवार बातें मैंने ग्रापको पत्र लिखा है, उस में बताई हैं । लेकिन फिर भी ग्राप उठाने नहीं देते हैं । 197 जो नियम है उस नियम में कहा गया है कि किसी भी सार्वजनिक हित के मामले को ग्रौर ग्रविलम्बनीय महत्व के किसी भी प्रश्न को ग्रापकी खाली ग्रनुमति ले कर उठाया जा सकता है । ग्रनुमति लेने का क्या यह मतलब है कि ग्रापको वीटो का ग्रधिकार है ? हर महत्वपूर्ण सवाल पर ग्राप वीटो इस्तेमाल करते जाएं ? पहले ग्रनुमति लेने का केवल यह मतलब है कि यकायक कोई ऐसा मामला न ग्राए जिसकी पहले से ग्रापको सूचना न दी गई हो । पहले प्रश्न ग्राया था । उसका जवाब हम ने ग़ौर से पढ़ा । है ग्रौर ग़ौर से पढ़ने के बाद मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि यह बहुत महत्वपूर्ण सवाल है ग्रौर इसकी ग्रोर मंत्री महोदय का ध्यान दिलाया जाना चाहिये । इसलिए कृपा करके ग्राप इसको स्वीकार करें । इसको कल रखें, परसों रखें, यह ग्राप पर निर्भर करता है । इससे एक लाख मजदूर तथा उनके कुटुम्बियों का सम्बन्ध है । यह कोई मामली सवाल नहीं है ।

ग्रध्यक्ष महोदय : मुझे ग्रख्त्यार है कि मैं ग्रपना फैसला दूं ?

श्री मधु लिमये : वीटो का ग्रधिकार नहीं है ।

ग्रध्यक्ष महोदय : वीटो का मतलब तो यह है कि फैसला किसने देना है । ग्रसल में तो देखना यह है कि किस ने फैसला देना है ग्रौर वह माना जाएगा या नहीं माना जाएगा ।

श्री सरजू पाण्डेय (रसड़ा) : माना जाएगा ।

ग्रध्यक्ष महोदय : क्या हर एक मैम्बर फैसला करेगा कि ग्राया जो मैं फैसला दूं वह ठीक है या नहीं ?

श्री मधु लिमये : माने बतायें ।

ग्रध्यक्ष महोदय : माने ग्रौर कुछ नहीं बता सकता हूं । जो फैसला मैंने किया है उसी पर मैं कायम हूं । ग्रौर मैं कोई वजह नहीं देखता हूं कि उसको मैं बदलूं ।

श्री हुकम चन्द कछवाय : ग्रध्यक्ष महोदय, एक ग्रौर महत्व का सवाल . . .

ग्रध्यक्ष महोदय : इस तरह से कोई सवाल नहीं उठाने दे सकता हूं ।

श्री हुकम चन्द कछवाय : बहुत महत्व का सवाल है । चीन ग्रौर पाकिस्तान जो भूमि दबाये हुए हैं, उसको वापिस नहीं लेना . . .

ग्रध्यक्ष महोदय : इस तरह से कैसे उठा सकते हैं ?

श्री हुकम चन्द कछवाय : प्रधान मंत्री बैठे हुए हैं ।

ग्रध्यक्ष महोदय : इस तरह से नहीं उठा सकते हैं ।

श्री हुकम चन्द कछवाय : किस तरह से उठा सकते हैं ?

ग्रध्यक्ष महोदय : ग्राप बैठ जाइये ।

12.14 hrs.

CALLING ATTENTION TO MATTERS OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE—*contd.*

(ii) Postponement of Afro-Asian Conference in Algiers—*Contd.*

Shri Hari Vishnu Kamath (Hoshangabad): Considering that China, after the ignominious failure of its diabolical conspiracy in Indonesia, had strenously advocated postponement of the Algiers Conference fearing loss of face and loss of support in the Afro-Asian world whereas India had opposed such postponement all along, does the postponement now *sine die*, that is the virtual abandonment of the conference, signify a diplomatic